अध्याय 6

अय्यूब का उत्तर
(भाग 1)

अध्याय 6 में अय्यूब ने सामूहिक रूप में मित्रों से बात की। इस तथ्य का पता मध्यम पुरुष बहुवचन सर्वनाम ''तुम'' के उपयोग में मिलता है। अध्याय 7 में उसने सीधे परमेश्वर से शिकायत की।

''मेरा दुःख समुद्र की रेत से भी भारी है'' (6:1-7)

[1]फिर अय्यूब ने कहा, [2]''भला होता कि मेरा खेद तौला जाता, और मेरी सारी विपत्ति तुला में रखी जाती! [3]क्योंकि वह समुद्र की बालू से भी भारी ठहरती; इसी कारण मेरी बातें उतावली से हुई हैं। [4]क्योंकि सर्वशक्तिमान के तीर मेरे अन्दर चुभे हैं; और उनका विष मेरी आत्मा में पैठ गया है; परमेश्वर की भयंकर बात मेरे विरुद्ध पाँति बाँधे हैं। [5]जब बनैले गदहे को घास मिलती, तब क्या वह रेंकता है? और बैल चारा पाकर क्या डकारता है? [6]जो फीका है वह क्या बिना नमक खाया जाता है? क्या अण्डे की सफेदी में भी कुछ स्वाद होता है? [7]जिन वस्तुओं को मैं छूना भी नहीं चाहता वही मानो मेरे लिये घिनौना आहार ठहरी हैं।''

आयतें 1-3. अय्यूब ने शिकायत की कि उसका बोझ इतना भारी है कि उठाया नहीं जा सकता। यदि उसके **खेद** और **विपत्ति** को तराजू पर तौला जा सकता तो **ये समुद्र की बालू से भी भारी** होते। जिन्होंने भारी बोझ उठाया हो वे उस पर तरस खा सकते हैं। इसी कारण उसकी **बातें उतावली से हुई** थीं। ''उतावली'' शब्द का अनुवाद ''अविवेकी'' या ''लापरवाही'' भी हो सकता है।

आयत 4. यह स्पष्ट है कि अय्यूब को परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध की समझ नहीं आ रही थी। उसने परमेश्वर को **तीर** चलाने वाले शत्रु के रूप में देखा, जिनका **विष** उसकी **आत्मा** में घुस गया था। परोपकारी परमेश्वर जिसे वह पहले जानता था अब वह परमेश्वर बन गया था जो उसके विरुद्ध अपनी **पांति बांधे** था। जॉन ई. हार्टले ने समझाया है, ''अय्यूब यह मान लेता है कि अच्छी तरह किलेबंद नगर की एक शक्तिशाली सेना को बढ़ाते हुए सेनापति की तरह परमेश्वर ने भयंकर बातों की सेना उसके विरुद्ध तैनात कर दी है।''[1] हम अय्यूब के मन में विराग की भावना को बढ़ते हुए देखते हैं। परिवार और मित्रों द्वारा ठुकराया हुआ वह पहले ही नगर के कूड़े के ढेर पर रह रहा था।

आयतें 5-7. आयतें 5 और 6 में अय्यूब ने अपनी स्थिति की व्यर्थतता की ओर ध्यान दिलाने के लिए अलंकारिक प्रश्नों का इस्तेमाल किया। प्रत्येक प्रश्न का अपेक्षित उत्तर ''न'' है। **बनैले गधे और बैल** खाना मिलने पर संतुष्ट हो जाते है, परन्तु अय्यूब को लगा कि उसे परमेश्वर

की ओर से फीका और घिनौना भोजन दिया गया है।[2] उन **वस्तुओं को छूना भी नहीं चाहता** था **मानो** वे उसके **लिये घिनौना आहार ठहरी हैं**। उसका जीवन ''घृणित'' बन गया था।

''मैंने उस पवित्र के वचनों का कभी इनकार नहीं किया'' (6:8-13)

[8]''भला होता कि मुझे मुँह माँगा वर मिलता और जिस बात की मैं आशा करता हूँ वह परमेश्वर मुझे दे देता, [9]कि परमेश्वर प्रसन्न होकर मुझे कुचल डालता, और हाथ बढ़ाकर मुझे काट डालता! [10]यही मेरी शान्ति का कारण होता; वरन् भारी पीड़ा में भी मैं इस कारण से उछल पड़ता; क्योंकि मैं ने उस पवित्र के वचनों का कभी इन्कार नहीं किया। [11]मुझ में बल ही क्या है कि मैं आशा रखूँ? मेरा अन्त ही क्या होगा कि मैं धीरज धरूँ? [12]क्या मेरी दृढ़ता पत्थरों की सी है? क्या मेरा शरीर पीतल का है? [13]क्या मैं निराधार नहीं हूँ? क्या काम करने की शक्ति मुझ से दूर नहीं हो गई?''

आयतें 8, 9. अपने दु:ख से छुटकारा पाने के लिए एक बार फिर से अय्यूब ने मृत्यु की इच्छा की, **कुचल डालता** और **काट डालता** दोनों मृत्यु के लिए उपमाएं हैं।

आयत 10. परन्तु अय्यूब को अभी भी **भारी पीड़ा में भी शांति** थी। वह इस विचार से **उछल** पड़ा कि **''मैंने उस पवित्र के वचनों का कभी इन्कार नहीं किया।''** परमेश्वर में विश्वास का कितना सुन्दर वर्णन है! होमेर हेली ने लिखा है, ''उसके पास उस पवित्र के वचन चाहे जितने भी थे उसने उन्हें वफादारी से रखा था।''[3] परमेश्वर को पुस्तक में केवल यहीं पर ''पवित्र'' कहा गया है।

आयतें 11-13. अय्यूब को परमेश्वर की कमज़ोरी का पता था। यह ध्यान देना दिलचस्प है कि बेहेमोथ और लिव्यातान के परमेश्वर के आगे के विवरण में **पत्थरों** और **पीतल** का इस्तेमाल हुआ है (40:18; 41:24)।[5] अय्यूब अच्छी तरह से जानता था कि **सहायता** और **छुटकारा** उसको बाहर से ही मिलना था।

विश्वासघाती भाई (6:14-23)

[14]''जो पड़ोसी पर कृपा नहीं करता वह सर्वशक्तिमान का भय मानना छोड़ देता है। [15]मेरे भाई नाले के समान विश्वासघाती हो गए हैं, वरन् उन नालों के समान जिनकी धार सूख जाती है; [16]और वे बरफ के कारण काले से हो जाते हैं, और उनमें हिम छिपा रहता है। [17]परन्तु जब गरमी होने लगती तब उनकी धाराएँ लोप हो जाती हैं, और जब कड़ी धूप पड़ती है तब वे अपनी जगह से उड़ जाते हैं, [18]वे घूमते घूमते सूख जातीं, और सुनसान स्थान में बहकर नष्ट होती हैं। [19]तेमा के बनजारे देखते रहे और शबा के काफिलेवालों ने उनका रास्ता देखा। [20]वे लज्जित हुए क्योंकि उन्होंने भरोसा रखा था और वहाँ पहुँचकर उनके मुँह सूख गए। [21]उसी प्रकार अब तुम भी कुछ न रहे; मेरी विपत्ति देखकर तुम डर गए हो। [22]क्या मैं ने तुम से कहा था, 'मुझे कुछ दो?' या 'अपनी सम्पत्ति में से मेरे लिये घूस दो?' [23]या 'मुझे सतानेवाले के हाथ से बचाओ?' या 'उपद्रव करनेवालों के वश से छुड़ा लो?'

इस पद्य में अय्यूब ने अपने मित्रों को संसार के उस भाग के विश्वासघाती नालों से मिलाया। भयंकर तूफान के बाद वे थोड़ी देर के लिए पानी से भरे रहते थे, पर गर्मी के मौसम में जब उनकी सबसे अधिक आवश्यकता होती तब वे सूख जाते थे।

आयत 14. अय्यूब और उसके तीन मित्रों के बीच किसी प्रकार का वाचा का सम्बन्ध अवश्य होगा।[6] उनके बीच कोई वाचा थी या नहीं, पर निश्चित रूप में वह उन से **कृपा** की उम्मीद कर सकता था। अनुवाद हुआ शब्द ''कृपा'' का अनुवाद शब्द *chesed* (*चेसेड*) करुणा, वफादारी, निष्ठा और खराई को दर्शाता हुआ बहुआयामी शब्द है।[7] नॉरमन स्नेथ ने कहा है कि ''मूल शब्द के असल अर्थ में हम पाते हैं कि सम्पूर्ण समर्पण और पूरी खराई की सामान्य कड़ी परमेश्वर के अनुग्रह की भक्ति है।''[8] आदर्श रूप में अय्यूब के मित्रों की दिलेरी से उसे सहारा मिलना चाहिए था जिससे वह **सर्वशक्तिमान का भय मानना** छोड़ न देता (4:6 पर टिप्पणियां देखें)।

आयतें 15-20. अय्यूब ने मित्रों को **भाई** बताया जिन्हें उसकी बीमारी और नुक्सान में उसकी सहायता करनी चाहिए थी और उसे तसल्ली देनी चाहिए थी। इसके बजाय वे **नाले के समान विश्वासघाती हो गए**। ''नाला'' रेगिस्तान के नाले को कहा गया है जो बारिश की **धार** आने पर बड़ी तेजी से बहता है पर तब सूख जाता है जब इसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है। तब इससे प्यासे **बंजारों** को कुछ मदद नहीं मिलती। नाले में अपनी आशा रखने वाले **लज्जित हुए** और उनके **मुंह सूख गए**। ''मुंह सूख गए'' (*chaper, चापेर*) का अनुवाद ''हताश हुए,'' ''शर्मिंदा हुए,'' या ''अपमानित हुए'' भी हो सकता है।[9] मेरवन एच. पोप ने आयत 20 का अनुवाद इस प्रकार से किया है: ''जिन्हें भरोसा था उन्हें धोखा हुआ; वे आए और हैरान रह गए।'' **तेमा** और **शबा** अरब के रेगिस्तान में व्यापार मार्गों के साथ-साथ महत्वपूर्ण रमणीय स्थल थे; तेमा उत्तर पश्चिम में था जबकि शबा दक्षिण पश्चिम में।

आयत 21. अय्यूब ने अपने मित्रों को मरुस्थल के विश्वासघाती चश्मों की तरह बताकर उन पर सीधे-सीधे आरोप लगाया। **उसी प्रकार अब तुम भी कुछ न रहे; मेरी विपत्ति देखकर तुम डर गए हो।** वे अय्यूब की स्थिति को देखकर भयभीत हो गए और उन्होंने तुरन्त अय्यूब को एक बड़ा पापी ठहरा दिया। परमेश्वर के न्याय की उनकी पूर्वधारणा वाले विचारों में धर्मी दुःख उठाने वालों के लिए कोई जगह नहीं है।

आयतें 22, 23. अय्यूब ने तीनों मित्रों को सम्बोधित किया, बोला चाहे यहां तक एलीपज ही था। इन आयतों में इब्रानी मौखिक रूप बहुवचन में है; ''तुम'' (बहुवचन) को प्रत्येक प्रश्न का विषय समझा जाता है। अय्यूब ने अपने मित्रों के सामने कोई उचित या अनुचित विनती नहीं की थी। उसने उनसे कोई उपहार नहीं मांगा था या उनसे यह नहीं कहा था कि मुझे **घूस दो**। उसने कभी यह विनती नहीं थी कि उसे उसके शत्रुओं से **बचाओ** या उसके दमनकारियों से **छुड़ा लो**।

''मुझे बताओ कि मैंने किस बात में चूक की है'' (6:24-30)

[24]''मुझे शिक्षा दो और मैं चुप रहूँगा; और मुझे समझाओ कि मैं ने किस बात में चूक की है। [25]सच्चाई के वचनों में कितना प्रभाव होता है, परन्तु तुम्हारे विवाद से क्या लाभ

होता है? [26]क्या तुम बातें पकड़ने की कल्पना करते हो? निराश जन की बातें तो वायु की सी हैं। [27]तुम अनाथों पर चिट्ठी डालते, और अपने मित्र को बेचकर लाभ उठानेवाले हो। [28]इसलिये अब कृपा करके मुझे देखो; निश्चय मैं तुम्हारे सामने कदापि झूठ न बोलूँगा। [29]फिर कुछ अन्याय न होने पाए; फिर इस मुक़द्दमे में मेरा धर्म ज्यों का त्यों बना है, मैं सत्य पर हूँ। [30]क्या मेरे वचनों में कुछ कुटिलता है? क्या मैं दुष्टता नहीं पहचान सकता?''

आयत 24. शिक्षा दो शब्द इब्रानी हाइफिल, या क्रिया के कारणवाचक रूप *yarah* (*याराह*) में है; इसका अर्थ, ''आदेश करना,'' ''पढ़ाना,'' या ''समझाना'' है। **मुझे समझाओ** क्रिया के हाइफिल रूप *bin* (*बिन*) में है और इसका मूल अर्थ है ''मुझे समझाओ।'' यहां पर ''चूक'' (*shagah, शागाह*) करने का अर्थ अनजाने में किए गए पाप को कहा गया है यानी वे पाप जो अज्ञानता में किए गए थे।[11] अय्यूब ने कभी यह इनकार नहीं किया कि उसने पाप किया है; पर उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि उसने इतना बड़ा पाप नहीं किया कि उसे इतना बड़ा दु:ख सहना पड़े।

आयतें 25-30. अय्यूब ने मित्रों की बातों को पलट दिया जो उस पर उन पापों का दोष लगाने के इरादे से थीं जो उसने किए ही नहीं थे। उसने उन्हें उसकी स्थिति को समझने का आग्रह किया जिसके कारण वह **निराश जन की बातें** बोल रहा था। अय्यूब ने उन पर उनकी तरह जो **अनाथों पर चिट्ठी डालते, और अपने मित्र को बेचकर लाभ उठानेवाले** होते हैं, परवाह न करने वाले व्यवहार वाले होने का आरोप लगाया। हार्टले ने लिखा है, ''पुराने जमाने के समाज में जब कोई कर्ज में डूब जाता तो लेनदार यह तय करने के लिए कि कर्ज के बदले में किसे बेचा जाए उसके सामान या उसके बच्चों तक के लिए पर्ची डालते (तुलनाएं 2 राजाओं 4:1)।''[12]

अय्यूब इस बात पर अड़ा रहा कि उसने उनसे झूठ नहीं बोला था और उन्हें यकीन दिलाया कि उसका **धर्म** ज्यों का त्यों था।[13] वास्तव में उसके **वचनों में कुछ कुटिलता** नहीं थी। उसका **तालू** अभी भी भले और बुरे को **पहचान** सकता था। ''तालू'' या मुंह के अंदर के ऊपरी भाग को अनुभवों जैसे खट्टे, मीठे या नमकीन के अंतर को समझने वाले के रूप में देखा जाता है।

प्रासंगिकता

अय्यूब का उत्तर (अध्याय 6)

आरोपों, नालिशों और/या बुरी सलाह का जवाब आप कैसे देते हैं? जब वे लोग जिनसे हम प्रेम करते हैं हम पर विश्वास नहीं करते तो हम क्या करते हैं? हम जानते हैं कि वे परिस्थितियां हमें दु:ख पहुंचाती, परेशान करती, और निराश करती हैं। अय्यूब के मित्र एलीपज के द्वारा उस पर इन सब विपत्तियों के आने के लिए उसी पर आरोप लगाए जाने के तुरंत बाद अय्यूब भावुक हो गया होगा! कल्पना करें कि अय्यूब को कैसा लगा होगा जब एलीपज ने उसे सुझाव दिया कि परमेश्वर उसे उन बातों के लिए ताड़ना दे रहा है जो उसने सर्वशक्तिमान के विरुद्ध की हैं। हम में से अधिकतर लोग ऐसा कहे जाने पर आग बबूला हो जाते हैं, और हम में से कई ऐसे उत्तर देते हैं जो मसीह के तरीके के निम्न स्तर का है। आइए अय्यूब के जवाब को देखें।

''भला होता कि मेरा खेद तौला जाता'' (6:2)। अय्यूब ने एलीपज के सवालों का जवाब

यह कहते हुए दिया कि ''मेरी ओर देखो।'' अय्यूब को अच्छी नज़र से देखें। उसके दस के दस बच्चे मर गए थे। मेरे कई मित्रों के बच्चे मरे हैं और उनकी पीड़ा लगभग असहनीय थी। बीस साल पहले मेरे चाचा चाची का एक बच्चा खोया था और मेरे चचेरे भाई की मृत्यु की खबर मुझे फोन पर देने पर उनके हाव-भाव मुझे आज भी याद हैं। वह बीस साल पहले की बात थी और हमारा परिवार आज भी उसकी मृत्यु से दु:खी है। हर साल क्रिसमस की छुट्टियों में मैं उस प्रार्थना सभा में जाता हूं जिसमें हम से पहले इस संसार से चले जाने वाले बच्चों के जीवन के सम्मान में उन्हें याद किया जाता है। यह हर बार भावनात्मक और यादगारी मौका होता है। मेरा दिल हर माता-पिता के लिए भर आता है जिन्होंने अपने बच्चे को खोया है। परन्तु मैंने कोई बच्चा नहीं खोया और इसलिए मैं उनकी पीड़ा को नहीं समझ सकता। अपने दस के दस बच्चों के खोने की पीड़ा की कल्पना करने की कोशिश करें। ऐसा कोई तरीका *नहीं* है कि एलीपज अय्यूब की भावनात्मक पीड़ा को समझ सकता।

अय्यूब अत्यधिक शारीरिक पीड़ा में था। किसी को भी शारीरिक पीड़ा अच्छी नहीं लगती। पीड़ा सहने की सहनशीलता रखने वालों का भी धैर्य जवाब दे जाता है जब वह पीड़ा असहनीय हो जाती है और वे राहत पाना चाहते हैं। दर्दनाक छालों से भरे और सिर से पैर तक फोड़े ही फोड़े होने की कल्पना करें (2:7)! अय्यूब राख के ढेर में बैठा और ठीकरी लेकर कुछ राहत पाने की उम्मीद से अपने आपको खुरच रहा था (2:8)। जब अय्यूब के तीनों मित्रों ने उसे पहली बार देखा तो वे ''उसे न पहचान सके'' (2:12)। अय्यूब अत्यधिक भावनात्मक और शारीरिक पीड़ा में था इसके अलावा उसके खेत, सेवक और जीविका भी सब छिन गए थे।

इस पीड़ा से बढ़कर अय्यूब के मित्र एलीपज ने उस पर कुछ ऐसा पाप करने का आरोप लगा दिया जिस कारण परमेश्वर का क्रोध और ताड़ना उस पर पड़ी। वह आरोप एक चीख की तरह था। जब अय्यूब ने अंत में एलीपज को उत्तर दिया तो उसने कहा, ''भला होता कि मेरा खेद तौला जाता, और मेरी सारी विपत्ति तुला में रखी जाती!'' (6:2)। यदि हम समुद्र की रेत को तौल सकते तो आपको क्या लगता है कि वह कितनी भारी होगी? अय्यूब ने कहा कि उसकी पीड़ा उससे भी भारी थी। ऐसा कोई तरीका नहीं है कि एलीपज अय्यूब की पीड़ा की गहराई को समझ पाता।

एक मित्र के रूप में एलीपज को अय्यूब के लिए क्या करना चाहिए था। गलातियों 6:2 हम से कहता है कि ''तुम एक दूसरे का भार उठाओ।'' मित्रों और शांति देने वालों के रूप में हम उस सारे भार को उठाने की कोशिश करेंगे जो हमारे मित्र उठा रहे हैं। अध्याय के अंत के निकट, अय्यूब ने कहा, ''अब कृपा करके मुझे देखो; निश्चय मैं तुम्हारे सामने कदापि झूठ न बोलूँगा'' (6:28)। शारीरिक रूप में एलीपज अय्यूब को देख रहा था। परन्तु मुझे नहीं लगता कि उसने सचमुच में अय्यूब की पीड़ा की गहराई को देखा हो। यदि हम सचमुच में दु:खी लोगों को देखें तो हम उनके प्रति करुणामय और दयालु होंगे।

''भला होता कि मुझे मुंह मांगा वर मिलता'' (6:8)। अय्यूब की भावनात्मक और शारीरिक पीड़ा बहुत गहरी थी, इसीलिए अय्यूब मरकर अपने दु:ख से छुटकारा पाना चाहता था। अय्यूब ने अपनी पीड़ा को ''भारी पीड़ा'' बताया। अय्यूब के लिए यह बेरहम थी और यह भी खत्म नहीं होनी थी या इसने जाना नहीं था। अय्यूब इतना ही चाहता था कि उसकी सारी पीड़ा

जाती रहे और इसीलिए उसने मरने की विनति की। मैं ऐसे बहुत से लोगों को जानता हूं जो ऐसी मनोस्थिति में हैं, और यह दु:खद बात है। परन्तु परमेश्वर ने अय्यूब की विनती को नहीं माना क्योंकि अपनी महिमा और हमारी भलाई के लिए अय्यूब की कहानी का इस्तेमाल करने की उसकी एक बड़ी योजना थी। पुरानी कहावत है, ''दूरंदेश 20/20 है।'' उन समयों को देखने के लिए कि जब हमने परमेश्वर से विनतियां कीं जो उसने नहीं मानीं और यह समझने के लिए कि हम कितने अहसानमंद हैं कि परमेश्वर ने हमारी विनतियों को स्वीकार नहीं किया, आइए अपने जीवनों में पीछे देखते हैं।

मैं ने उस पवित्र के वचनों का कभी इनकार नहीं किया (6:10)। क्या आपके मुंह से यह बात निकल सकती है? अय्यूब एलीपज से कह रहा था कि यदि परमेश्वर मरने की उसकी विनती को मान भी ले तो भी यह जानते हुए कि वह अपने परमेश्वर का वफादार रहा, खराई से मरेगा। क्या हम सौ प्रतिशत यकीन से यह बात कह सकते हैं? अय्यूब चाहे उलझन में था और उसे इस बात की समझ नहीं थी कि उस पर इतनी विपत्तियां क्यों आई हैं, फिर भी हम इस बात का धन्यवाद कर सकते हैं कि अय्यूब ने ऐसा जीवन जीया और उस पर इतना भरोसा था। आयत 22 में उसने एलीपज से कई प्रश्न पूछे, ''क्या मैं ने तुम से कहा था, 'मुझे कुछ दो?' या 'अपनी सम्पत्ति में से मेरे लिये घूस दो?' या 'मुझे सतानेवाले के हाथ से बचाओ?' या 'उपद्रव करनेवालों के वश से छुड़ा लो?''' अय्यूब का जीवन ''मैं पहले'' वाली सोच वाला नहीं था और उसके मित्रों को भी इसका पता होगा। इसलिए अपने मन में कहीं एलीपज को यह बात पता होगी कि इन सारे प्रश्नों का उत्तर साफ तौर पर *''न''* होना था!

''मुझे समझाओ कि मैंने किस बात में चूक की है'' (6:24) अय्यूब ने सबूत देने का जिम्मा एलीपज पर डाल दिया। उसे मालूम था कि वह एक ईमानदार आदमी है और एलीपज के सारे आरोप गलत थे। आयत 28 में अय्यूब ने एलीपज से कहा, ''मैं तुम्हारे सामने कदापि झूठ न बोलूंगा।'' यह पूछने के लिए कि हम पर कभी कोई गलत आरोप लगा है यह बहुत बढ़िया प्रश्न है।

एक बार मेरे पास कलीसिया की एक सदस्य आई और मेरे साथ बातें करने लगी जिसमें उसने ऐसे निर्णय लेने की अपनी भावनाओं को बताया जो मैंने सार्वजनिक तौर पर बताया और उसकी घोषणा की थी। मसीह में यह बहन उन कारणों को नहीं मानना चाहती थी जो मैंने अपने निर्णय के लिए दी थीं। बुनियादी तौर पर एलीपज की तरह वह मुझ पर निष्कपट न होने का आरोप लगा रही थी। उसके आश्चर्य को सुनने के बाद मैंने वही कहा जो अय्यूब ने यहां पर कहा। मैंने उसकी आंखों में देखते हुए कहा, ''मैं इतने समय से तुम्हारा प्रचारक हूं, और या तो आप मुझ पर विश्वास करती हैं या यह मानती हैं कि मैंने आपसे झूठ बोला है। दोनों में से कौन सी बात सही है?'' मैं उसके उत्तर को कभी नहीं भूल पाऊंगा। उसे इस बात का श्रेय है कि उसने कहा, ''आपने इसे इस प्रकार से कहा है, इसलिए मैं मान लेती हूं कि ऐसा ही है।'' अय्यूब की तरह हर मसीही को खराई वाला जीवन जीना चाहिए और यह प्रश्न पूछने के योग्य होना चाहिए।

एफ़. मिलस

टिप्पणियां

[1]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 132. [2]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 99. [3]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 73. [4]''द होली वन'' या ''द होली वन ऑफ़ इस्राएल'' परमेश्वर के लिए यशायाह का पसंदीदा पदनाम है (उदाहरण के लिए, यशायाह 1:4; 5:19, 24; 40:25; 41:14)। इस शब्द की चर्चा डॉन शैकलफोर्ड, *यशायाह, टुर्थ फ़ॉर टुडे* कॉमैंट्री (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 2005), 31 देखें। [5]आल्डन ने इस पुनरावृत्ति को ''एक और समर्थन कि इस पूरी पुस्तक में एक हाथ जिम्मेदार है'' के रूप में देखा (आल्डन, 101)। [6]हार्टले, 137. [7]आल्डन, 102; और नॉर्मन स्नेथ, द *डिस्टिंक्टिव आइडियाज़ ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (न्यू यॉर्क: शोकन बुक्स, 1964), 99. [8]स्नेथ, 95. [9]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, द *हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. ऐंड सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:340–41; फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर ऐंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू ऐंड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 344; ऐंड आल्डन, 103. [10]मेरविन एच. पोप, *अय्यूब,* द एंकर बाइबल, अंक 15 (गार्डन सिटी, न्यूं यॉर्क: डबलडे ऐंड कंपनी, Inc., 1965), 49.

[11]हार्टले, 140; देखें ब्राउन, ड्राइवर ऐंड ब्रिगस, 993; और कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 2:1413. [12]वहीं, 141. [13]अपने इस भाषण के अंत के करीब, अय्यूब ने इस बात का दावा किया कि यह पवित्र शास्त्र में कहीं भी पाए जाने वाले व्यक्तिगत नैतिकता के व्यापक कथन से पूरी तरह से मेल खाता है (31:1–40)।